Teacher's Name - Sanjay Kumar Verma
B.Ed 1st year (19-21) Paper - C6

Date: 15/06/20

* **जेण्डर समानता** —: (बालिका शिक्षा के अंतर्गत)

जेण्डर समानता का तात्पर्य है बालक और बालिकाओं को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करना तथा विभिन्न क्षेत्रों में समान रूप से भाग लेने का अवसर प्रदान करना। बालिका शिक्षा के अंतर्गत शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों को दूर कर सामाजिक समानता का अवसर प्रदान किया जाता है जिससे लिंगीय, जातीय, आर्थिक, सामाजिक इत्यादि किसी भी प्रकार का भेदभाव न किया जा सके और साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में इनकी उपस्थिति बढ़ाया जा सके।

* **बालिका शिक्षा के उद्देश्य** —:

बालिका शिक्षा के उद्देश्य विभिन्न कालों में भिन्न-2 रहे हैं। अतः विभिन्न कालों में बालिकाओं की शिक्षा के निम्न उद्देश्य इस प्रकार रहे हैं —

प्राचीन काल
- → आचरण की शुद्धता
- → पवित्र जीवन की तैयारी
- → ज्ञान प्राप्ति
- → सत्य की खोज
- → योग्य संतानोत्पत्ति

मध्यकाल
- → इस्लाम शिक्षा को बढ़ावा देना
- → कुरान से अवगत
- → इस्लाम धर्म का पालन
- → जीवन कर्तव्यों का निर्वहन।

आधुनिक काल
- → नौकरी प्राप्ति
- → आर्थिक आत्मनिर्भरता
- → लोकतांत्रिक आदर्शों का पालन
- → सभ्य समाज निर्माण

Scanned with CamScanner

* बालिका शिक्षा का महत्व :-

→ (1) पारिवारिक उन्नति हेतु
→ (2) योग्य संतान हेतु
→ (3) आर्थिक स्वावलंबन हेतु
→ (4) राष्ट्रीय एकता तथा उन्नति हेतु
→ (5) सांस्कृतिक संरक्षण हेतु
→ (6) मानवीय संसाधन की गुणवत्ता हेतु
→ (7) संवैधानिक प्रावधानों की रक्षा हेतु
→ (8) सभ्य समाज की स्थापना हेतु
→ (9) जागरूकता हेतु
→ (10) सामाजिक कुरीतियों को समाप्ति हेतु

* बालिका शिक्षा की समस्यायें :-

→ (1) लिंगीय असमानता
→ (2) रूढ़िवादी विचार
→ (3) अशिक्षा
→ (4) सामाजिक परिवेश
→ (5) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली

(6) महिला विद्यालय तथा शिक्षकाओं का अभाव

(7) छात्रावास की कमी

(8) आवागमन के साधनों का अभाव

(9) पुरुष-प्रधान समाज

(10) आर्थिक समस्याएँ

* बालिका शिक्षा की समस्याओं के लिए समाधान —

(1) घर और बाहर बेटियों को भी समान अवसर प्रदान करना।

(2) बालिकाओं को बालकों से हीन नहीं समझना।

(3) शिक्षा का प्रचार - प्रसार

(4) स्त्री-पुरुष समानता के मध्य की खाई को कम करने का प्रयास

(5) रोजगार परक योजनाओं तथा बालिका शिक्षा योजनाओं में लाभ प्राप्त करना।

(6) शिक्षा को व्यावसायोन्मुखी बनाना।

(7) सामाजिक कुरीतियों को समाप्त।

Scanned with CamScanner

बालिका शिक्षा के लिए आवश्यक सुझाव :

(1) विद्यालयों में बालिकाओं की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना।

(2) बालिका शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु योजनाओं का निर्माण।

(3) बालिका शिक्षा में वृद्धि हेतु प्रौढ़ शिक्षा का प्रचार करना।

(4) महिला शिक्षिकाओं की नियुक्ति।

(5) बालिका शिक्षा में वृद्धि हेतु सामाजिक जागरूकता पैदा करना।

निष्कर्ष :

बालिका शिक्षा की राह आज भी तमाम अवरोधों और असमानताओं से भरी हुई है। आज भी समाज में मौजूद असमानता किसी न किसी रूप में विद्यमान है जिसे पूर्णतः समाप्त करने के लिए शिक्षा के क्षेत्रों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में भी बालिकाओं की शिक्षा उच्च प्राथमिकता आवश्यक है। अतः इस दिशा में आवश्यक है जागरूकता और सकारात्मक परिवर्तन की जिससे समाज विकास की ओर प्रगतिशील हो।